वाट्सऐप @ 94140-78380, 92140-78380 | वर्ष:5 अंक: 248 रविवार 25 जनवरी 2026 | दैनिक ई-पेपर

शाबाश इंडिया

@ShabaasIndia | प्लॉट नंबर 8, ओझा जी का बाग, गांधी नगर मोड, टोंक रोड, जयपुर

मुख्यमंत्री भजनलाल के नेतृत्व में प्राकृतिक खेती को मिल रही नई दिशा

टिकाऊ खेती को मिल रहा प्रोत्साहन, खेती की लागत हो रही कम

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार किसानों के सशक्तीकरण के लिए निरंतर निर्णय ले रही है। प्रदेश में प्राकृतिक खेती को भी बढ़ावा दिया जा रहा है, ताकि रसायनों पर निर्भरता कम होने के साथ ही यह क्षेत्र टिकाऊ कृषि की ओर अग्रसर हो। सरकार का लक्ष्य किसानों को रसायन-मुक्त और टिकाऊ प्राकृतिक खेती की ओर प्रोत्साहित करना है, जिससे मिट्टी की उत्पादकता में सुधार हो, खेती की लागत कम हो, किसानों की आय बढ़े और अधिकतम उपज प्राप्त हो सके।

प्राकृतिक खेती से 2 लाख 50 हजार किसानों को मिल रहा लाभ

1 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में 2 हजार कलस्टर बनाये गये

जयपुर. कासं

प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने के लिए राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2025-26 के बजट में व्यापक एवं दूरदर्शी कार्ययोजना की घोषणा की गई है। इसके तहत 2 लाख 50 हजार किसानों को प्राकृतिक खेती से जोड़ा जा रहा है। इसमें राष्ट्रीय प्राकृतिक खेती मिशन के तहत 2 लाख 25 हजार किसानों को केंद्र सरकार 60 प्रतिशत और राज्य सरकार 40 प्रतिशत योगदान दे रही है। अतिरिक्त 25 हजार किसानों को राज्य सरकार द्वारा शत प्रतिशत वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।

किसानों को दिया जा रहा विशेष प्रशिक्षण

प्राकृतिक खेती को संगठित रूप से लागू करने के लिए 125 किसानों के 50 हैक्टेयर क्षेत्र में 1 कलस्टर का गठन किया गया है। योजनान्तर्गत राज्य के सभी जिलों में 1 लाख हैक्टेयर क्षेत्र में 2 हजार कलस्टर बनाये गये हैं। मिशन के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए किसानों को विशेष प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है। उदयपुर के प्राकृतिक खेती केंद्र द्वारा विभागीय अधिकारियों, कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्रों के वैज्ञानिकों एवं किसान मास्टर ट्रेनरों को भी विशेष प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। चयनित कलस्टरों में किसानों में जागरुकता के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। प्रत्येक कलस्टर में किसानों के साथ समन्वय हेतु कृषि सखी/सीआरपी की नियुक्ति की गई है। इन कृषि सखियों को कृषि विज्ञान केंद्रों के द्वारा प्रशिक्षित किया गया है, जिससे वे किसानों को तकनीकी मार्गदर्शन उपलब्ध करा सकें। प्राकृतिक खेती को प्रोत्साहित करने के लिए चयनित किसानों को प्रति एकड़ 4 हजार रुपये की प्रोत्साहन राशि डीबीटी के माध्यम से दी जा रही है। यह राशि ऑन-फार्म इनपुट उत्पादन इकाइयों के लिए बुनियादी ढांचा स्थापित करने में सहायक सिद्ध हो रही है। सरकार यह सुनिश्चित कर रही है कि स्थानीय स्तर पर किसानों को प्राकृतिक उर्वरक एवं जैविक आदानों की आसानी से उपलब्धता हो। इस हेतु कृषि विभाग द्वारा बायो इनपुट संसाधन केंद्र स्थापित किये जा रहे हैं। कार्ययोजना के तहत प्रत्येक बायो इनपुट संसाधन केंद्र के लिए 1 लाख रुपये का प्रावधान है, ताकि स्थानीय स्तर पर प्राकृतिक उर्वरक तैयार हो सके। अब तक 180 बायो इनपुट संसाधन केंद्र स्थापित हो चुके हैं। राज्य सरकार की यह पहल किसानों को आत्मनिर्भर बनायेगी, साथ ही स्वस्थ मिट्टी, सुरक्षित पर्यावरण और सतत् कृषि विकास की दिशा में राज्य को एक नई पहचान दिलाएगी।

मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना के लिए आवेदन शुरू

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार द्वारा युवाओं को सरकारी नौकरी के साथ ही निजी क्षेत्र में रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने के लिए कई महत्वपूर्ण कदम उठाए जा रहे हैं। साथ ही, प्रदेश के युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने के लिए भी कई योजनाएं संचालित की जा रही हैं। इस क्रम में हाल ही में राज्य सरकार द्वारा एक और नई योजना मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना लागू की गई है। उद्योग एवं वाणिज्य विभाग के अतिरिक्त मुख्य सचिव (एसीएस) शिखर अग्रवाल ने बताया कि मुख्यमंत्री युवा स्वरोजगार योजना के लिए आवेदन की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है। इस योजना का लाभ लेने के लिए प्रदेश के युवा स्वयं की एसएसओ आईडी और ई-मित्र के माध्यम से ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। मुख्यमंत्री ने 12 जनवरी को इस योजना का शुभारंभ किया था।

आचार्य भगवन विद्यासागर जी महाराज के समाधि दिवस पर भव्य 'कीर्ति स्तंभ' का शिलान्यास

जबलपुर. शाबाश इंडिया

राष्ट्रसंत आचार्य भगवन विद्यासागर जी महाराज के समाधि दिवस के पावन उपलक्ष्य में जबलपुर की संस्कारधानी में एक ऐतिहासिक कार्यक्रम संपन्न हुआ। आचार्य श्री के पट्टशिष्य नवाचार्य श्री समय सागर जी महाराज के आज्ञानुवर्ती शिष्य, भावना योग प्रवर्तक, शंका समाधान के जनक एवं गुणायतन के प्रेरणास्रोत मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में भव्य 'कीर्ति स्तंभ' का शिलान्यास किया गया।

गणमान्य अतिथियों की उपस्थिति

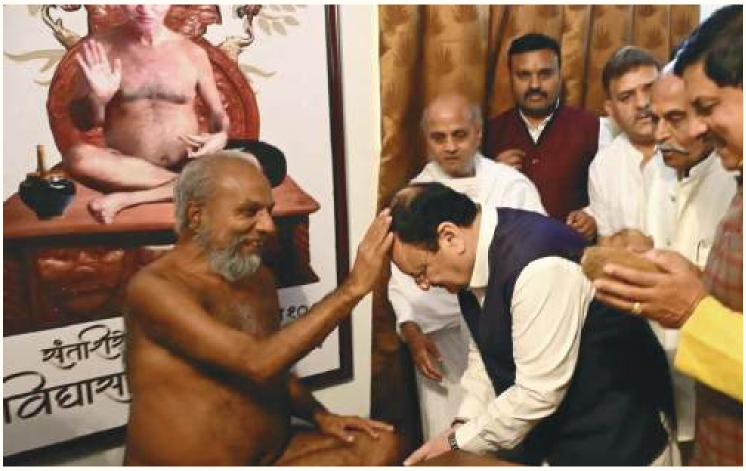

इस गौरवमयी अवसर पर भारत सरकार के केंद्रीय स्वास्थ्य मंत्री एवं भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री जे.पी. नड्डा, मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव, उपमुख्यमंत्री श्री राजेंद्र शुक्ला, सांसद श्री राकेश सिंह, स्थानीय विधायक और महापौर सहित अनेक जनप्रतिनिधियों ने मुनि श्री के चरणों में वंदन किया। सभी अतिथियों ने मुनि श्री प्रमाण सागर जी महाराज का आशीर्वाद लिया और देश, धर्म एवं भारत माता की सेवा के संकल्प पर चर्चा की। मुनि श्री के मंगल आशीर्वाद से होने वाले इस कीर्ति स्तंभ के निर्माण में जबलपुर के महापौर की भूमिका अत्यंत सराहनीय रही है। इस स्मारक के माध्यम से आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के जीवन मूल्यों और उनके सिद्धांतों को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास किया जाएगा। आचार्य श्री के समाधि दिवस पर कीर्ति स्तंभ के शिलान्यास से जबलपुर की संपूर्ण जैन समाज और धर्मप्रेमी जनता में भारी उत्साह देखा जा रहा है। लोगों का मानना है कि यह स्तंभ आने वाली पीढ़ियों के लिए अध्यात्म और संयम का प्रेरणा केंद्र बनेगा।

गायत्री नगर में बसंत पंचमी पर आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज का ऐतिहासिक पाद प्रक्षालन

जयपुर. शाबाश इंडिया

'भारत गौरव', 'साधना महोदधि' परम पूज्य अंतर्मना आचार्य श्री प्रसन्न सागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में गायत्री नगर में बसंत पंचमी एवं आचार्य श्री कुंदकुंद स्वामी की जन्म जयंती का उत्सव अत्यंत भक्तिभाव से मनाया गया।

भक्ति और पूजन की मंगल बेला

कार्यक्रम का शुभारंभ प्रातः 4:00 बजे सहस्त्रनाम पूजा, सम्मेद शिखर टोंक पूजा तथा पूर्व एवं वर्तमान परंपरा के आचार्यों के अर्घ्य एवं पूजन के साथ हुआ। इसके पश्चात, आचार्य श्री का मंगल पाद प्रक्षालन करने का सौभाग्य सुनील-लता सोगानी परिवार को प्राप्त हुआ।

धार्मिक सभा और गुरु भक्ति

अखिल भारतवर्षीय दिगंबर जैन युवा परिषद के राष्ट्रीय महामंत्री उदयभान जैन ने बताया कि दोपहर की स्वाध्याय सभा एवं गुरु पूजा का आयोजन सारसमल, पदम-भावना झांझरी, योगेश कासलीवाल और सूर्य प्रकाश छाबड़ा के परिवारों द्वारा किया गया। मंदिर प्रबंध समिति के अध्यक्ष कैलाश छाबड़ा, मंत्री राजेश वोहरा एवं उपाध्यक्ष अरुण शाह के विशेष निवेदन पर समाज के प्रत्येक मुखिया द्वारा आचार्य श्री के श्रीचरणों का पाद प्रक्षालन किया गया। आचार्य श्री ने प्रत्येक सदस्य को अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

मुनि वृंद का पावन उद्बोधन

उपाध्याय श्री पीयूष सागर जी महाराजः आपने 25 जनवरी से वीटी रोड पर प्रारंभ होने वाले 'चारित्र शुद्धि विधान' की महत्ता और उपयोगिता पर प्रकाश डाला। प्रवर्तक मुनि श्री सहज सागर जी महाराजः मुनि श्री ने कहा कि मनुष्य को छोटे-छोटे नियम लेकर जीवन सार्थक करना चाहिए। उन्होंने आचार्य श्री के 'स्वास्थ्य मिशन' का आह्वान करते हुए कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को माह में कम से कम एक उपवास अवश्य करना चाहिए और इस संकल्प को जन-जन तक पहुँचाना चाहिए।

डडूका: दिगंबर जैन पाठशाला में वसंतोत्सव की धूम, दो बेटियों का हुआ नवप्रवेश

पाठशाला प्रेरक अजीत कोठिया के नेतृत्व में आयोजित इस सत्र में बच्चों को माघ मास के 'दशलक्षण पर्व' की महत्ता बताई गई। इस दौरान विद्यार्थियों को उत्तम क्षमा आदि दस धर्मों की विस्तार से जानकारी दी गई।

डडूका. शाबाश इंडिया

वर्ष 1955 से निरंतर संचालित दिगंबर जैन पाठशाला, डडूका में 'वसंतोत्सव' का पर्व पारंपरिक श्रद्धा और भक्ति भाव के साथ मनाया गया। दिगंबर जैन समाज डडूका द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में बच्चों को जैन धर्म के आधारभूत सिद्धांतों से अवगत कराया गया।

धार्मिक संस्कारों का बीजारोपण

पाठशाला प्रेरक अजीत कोठिया के नेतृत्व में आयोजित इस सत्र में बच्चों को माघ मास के 'दशलक्षण पर्व' की महत्ता बताई गई। इस दौरान विद्यार्थियों को उत्तम क्षमा आदि दस धर्मों की विस्तार से जानकारी दी गई। साथ ही, महान जैन आचार्य श्री कुंदकुंद देव के अवतरण दिवस (जन्म जयंती) के पावन अवसर पर बच्चों को उनके जीवन और साहित्य से जुड़ी विशिष्ट जानकारियां प्रदान की गईं।

बेटियों का अभिनंदन और नवप्रवेश

इस वसंतोत्सव का विशेष आकर्षण दो नन्हीं बेटियों– हृदया चिराग जैन और हित्वी धवल सेठ का पाठशाला में नवप्रवेश रहा। दोनों बालिकाओं को श्रीफल भेंट कर विधिवत प्रवेश दिलाया गया। पाठशाला के अन्य बच्चों ने अपनी इन नई सहेलियों का उत्साहपूर्वक स्वागत और अभिनंदन किया।

अभिभावकों का सम्मान

इस अवसर पर पाठशाला प्रेरक अजीत कोठिया ने अभिभावक धवल सेठ, रेखा सेठ और चेष्टा जैन का स्वागत किया। उन्होंने बेटियों को जैन संस्कारों से जोड़ने के इस निर्णय की सराहना करते हुए परिवार को हार्दिक शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कहा कि पाठशाला का मुख्य उद्देश्य नई पीढ़ी में नैतिकता और धर्म के मूल्यों को जीवित रखना है।

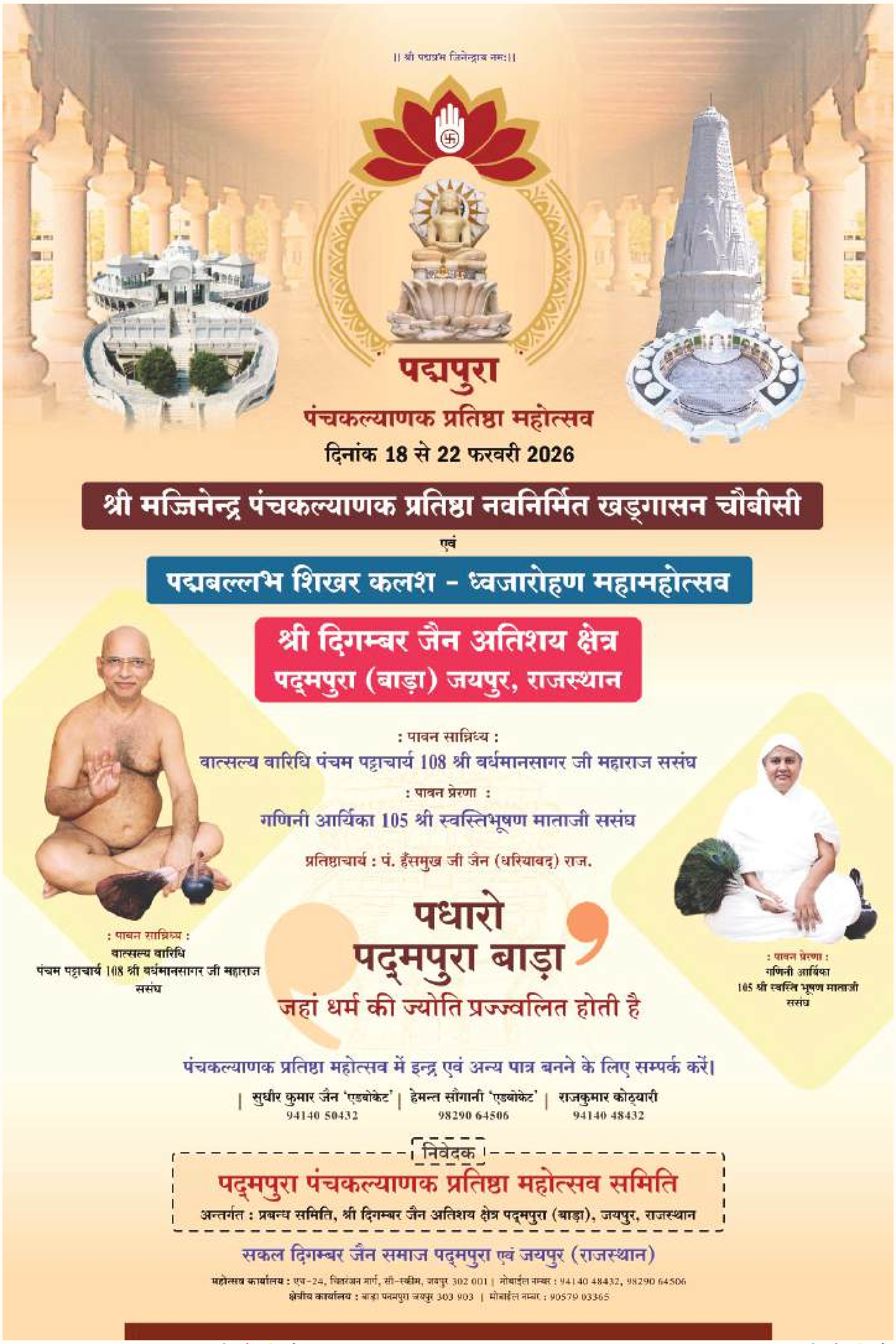

वेद ज्ञान

संसार सागर से बेड़ा पार कराता 'महामंत्र'

भारतीय भक्ति आंदोलन के आकाश में श्री चैतन्य महाप्रभु एक ऐसे देदीप्यमान नक्षत्र हैं, जिन्होंने प्रेम और संकीर्तन के माध्यम से जन-जन को ईश्वरीय चेतना से जोड़ा। उन्हें भगवान श्रीकृष्ण का अनन्य भक्त और राधा-कृष्ण का सम्मिलित अवतार माना जाता है। बंगाल के वैष्णव समाज में तो उन्हें साक्षात ईश्वर का रूप मानकर पूजा जाता है। श्री चैतन्य महाप्रभु का जन्म बंगाल के नवद्वीप नामक ग्राम में शक संवत 1407 की फाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा को हुआ था। उनके पिता का नाम श्री जगन्नाथ मिश्र और माता का नाम शची देवी था। बचपन से ही वे विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। न्यायशास्त्र में उन्हें प्रकांड पांडित्य प्राप्त था। उनकी उदारता का एक प्रसंग अत्यंत प्रसिद्ध है कहा जाता है कि उन्होंने न्यायशास्त्र पर एक अपूर्व ग्रंथ लिखा था। जब उनके एक मित्र ने ईर्ष्यावश यह कहा कि इस ग्रंथ के आने से उनके स्वयं के ग्रंथ का महत्व कम हो जाएगा, तो महाप्रभु ने बिना क्षण भर सोचे अपने ग्रंथ को गंगा जी में प्रवाहित कर दिया। यह उनके त्याग और निरहंकारी स्वभाव का प्रमाण था। मात्र 24 वर्ष की अवस्था में उन्होंने गृहस्थाश्रम का त्याग कर संन्यास ले लिया। उनके गुरु श्री केशव भारती थे। संन्यास के पश्चात उनका जीवन अलौकिक घटनाओं से भर गया। उन्होंने अद्वैत प्रभु को अपने 'विश्वरूप' के दर्शन कराए और नित्यानंद प्रभु को अपने नारायण एवं श्रीकृष्ण स्वरूप का साक्षात्कार कराया। उनकी माता शची देवी ने भी उन्हें बलराम और कृष्ण के रूप में देखा था। 'चैतन्य-चरितामृत' के अनुसार, महाप्रभु की कृपा से कई असाध्य रोगों से पीड़ित व्यक्ति भी स्वस्थ हो गए। महाप्रभु के जीवन के अंतिम छह वर्ष पूर्णतः राधा-भाव में बीते। जब वे कृष्ण प्रेम में मग्न होकर नृत्य करते थे, तो देखने वाले मंत्रमुग्ध रह जाते थे। उनकी भक्ति का प्रभाव इतना गहरा था कि वासुदेव सार्वभौम और प्रकाशानंद सरस्वती जैसे प्रकांड वेदांती भी उनके सान्निध्य में आकर कृष्ण प्रेमी बन गए। जगाई और मधाई जैसे दुराचारी व्यक्ति भी उनके स्पर्श और उपदेश से संत बन गए। चैतन्य महाप्रभु के भक्ति-सिद्धांत में द्वैत और अद्वैत का सुंदर समन्वय मिलता है। उनका मुख्य उद्देश्य भगवन्नाम का प्रचार और संसार में शांति की स्थापना करना था। उनके उपदेशों का सार हैः मनुष्य को अपने जीवन का अधिकतम समय भगवन्नाम संकीर्तन में लगाना चाहिए।

संपादकीय

सुविधा या मानसिक प्रताड़ना?

मोबाइल जिसे कभी सुविधा, सुरक्षा और संपर्क का सबसे सशक्त माध्यम माना जाता था, आज करोड़ों लोगों के लिए मानसिक अशांति का कारण बन चुका है। इसने दूरियों को तो कम किया, लेकिन 'बेलगाम दूरभाष-विपणन' (टेलीमार्केटिंग) के कारण आम आदमी की निजता और शांति को खतरे में डाल दिया है। आज स्थिति यह है कि उपकरण की घंटी बजते ही मन में प्रसन्नता के बजाय अनचाहे संवाद की आशंका और झुंझलाहट

पैदा होती है। एक औसत व्यक्ति के दिन की शुरुआत अक्सर किसी अनजान क्रमांक से आने वाले संवाद से होती है। आप गहरी नींद में हों, कार्यालय की किसी महत्वपूर्ण बैठक में हों, या परिवार के साथ निजी समय बिता रहे हों—इन व्यावसायिक केंद्रों को न समय की परवाह है और न ही परिस्थिति की। ₹श्रीमान, मात्र दो मिनट₹ का वह रटा-रटाया वाक्य कब व्यक्ति के दिन का चैन छीन लेता है, पता ही नहीं चलता। यह न केवल समय की बर्बादी है, बल्कि व्यक्ति की एकाग्रता और कार्यक्षमता पर भी सीधा प्रहार है। सबसे बड़ा प्रश्न यह है कि इन संस्थाओं के पास हमारा व्यक्तिगत विवरण और क्रमांक पहुंचता कैसे है? हमने कभी जिन्हें अपना विवरण नहीं दिया, वे पूरे आत्मविश्वास के साथ हमारा नाम और व्यवसाय तक जानते हैं। यह केवल विपणन की समस्या नहीं, बल्कि व्यक्तिगत गोपनीयता और निजता का घोर उल्लंघन है। इस डिजिटल युग में संपर्क क्रमांक अब केवल संवाद का जरिया नहीं, बल्कि एक बिकाऊ 'व्यापारिक वस्तु' बनकर रह गया है। सरकार और नियामक संस्थाओं ने 'अवरोधक सेवा' जैसी व्यवस्थाएं तो बनाई हैं, लेकिन धरातल पर इनका प्रभाव अत्यंत कम है। पंजीकरण के बावजूद अनचाहे संवादों का आना बंद नहीं होता। परिवाद (शिकायत) की प्रक्रिया इतनी जटिल और लंबी है कि आम आदमी हताश होकर चुप रह जाना ही उचित समझता है। यही हताशा संस्थाओं के हौसले बढ़ाती है। अब तो विपणन और कपटपूर्ण संवादों (फ्रॉड) के बीच की रेखा इतनी धुंधली हो गई है कि कम तकनीकी समझ रखने वाले वृद्धजन अक्सर इनके जाल में फंसकर अपनी जमा-पूंजी गंवा बैठते हैं। यहां यह समझना भी आवश्यक है कि संवाद करने वाला कर्मचारी अक्सर व्यवस्था की सबसे निचली और विवश कड़ी होता है। वे भारी दबाव, कम पारिश्रमिक और जीविका खोने के भय के बीच एक निश्चित आलेख के अनुसार कार्य करते हैं। वास्तविक उत्तरदायित्व उन बड़े व्यावसायिक घरानों और व्यवस्था का है, जो लाभ की अंधी दौड़ में नैतिकता और मानवीय संवेदनाओं को कुचल देते हैं। उनके लिए सौ में से एक व्यक्ति का जाल में फंस जाना ही उनके अभियान की सफलता है। तकनीक का उद्देश्य जीवन को सरल बनाना होना चाहिए, उसे कष्टकारी करना नहीं। समाधान के लिए अब ठोस और कठोर कदम उठाने होंगेः

विवरण सुरक्षा कानूनः व्यक्तिगत विवरण के उल्लंघन पर संस्थाओं पर भारी अर्थदंड और कठोर दंड का प्रावधान होना चाहिए। **-राकेश जैन गोदिका**

परिदृश्य

सम्मान और स्वाधिकार चाहिए

डॉ. प्रियंका सौरभ

आज जब हम विश्व बालिका दिवस मनाते हैं, तो देश-दुनिया में कार्यक्रमों, संगोष्ठियों और प्रतीकात्मक आयोजनों की बाढ़ आ जाती है। मंचों से बालिकाओं के सम्मान, सुरक्षा और सशक्तीकरण के बड़े-बड़े दावे किए जाते हैं। लेकिन मूल प्रश्न वही खड़ा है—क्या कैलेंडर की एक तारीख उस गहरी सामाजिक व्याधि का समाधान कर सकती है, जो पीढ़ियों से बालिकाओं के अस्तित्व को चुनौती दे रही है? वास्तविक सम्मान केवल भाषणों में नहीं, बल्कि समाज के दैनिक व्यवहार और सोच में झलकना चाहिए। भारतीय समाज में बालिकाओं को लेकर एक विचित्र विरोधाभास व्याप्त है। एक ओर हम उन्हें देवी, शक्ति और लक्ष्मी का रूप मानकर पूजते हैं, तो दूसरी ओर उनके जीवन पर सबसे कड़े नियंत्रण और प्रतिबंध भी हम ही लगाते हैं। जन्म से पूर्व लिंग चयन की त्रासदी से लेकर जन्म के बाद संसाधनों में भेदभाव तक, उनका जीवन संघर्षों की भेंट चढ़ जाता है। पूजा और अधिकारों के बीच की यह खाई हमारे सामाजिक मूल्यों के खोखलेपन को दर्शाती है।

भाषा और परंपरा की जड़ता

असमानता केवल व्यवहार में ही नहीं, हमारी भाषा और संस्कारों में भी रची-बसी है। विवाह के समय प्रचलित 'कन्यादान' शब्द इसका सटीक उदाहरण है। 'दान' किसी वस्तु का किया जाता है, किंतु बेटी कोई वस्तु नहीं है। वह एक स्वतंत्र व्यक्तित्व है, जिसकी अपनी चेतना, इच्छाएं और भविष्य है। विवाह को समानता और सहमति का आधार होना चाहिए। कन्यादान की अवधारणा अनजाने में ही पिता को 'दाता' और बेटी को 'दान' की वस्तु बना देती है, जो पितृसत्तात्मक मानसिकता को और पुख्ता करती है। इसके विपरीत 'पाणिग्रहण' जैसी अवधारणा साझेदारी का भाव प्रस्तुत करती है। आज भी समाज के बड़े हिस्से में बालिकाओं से उनके जीवन के सबसे महत्वपूर्ण निर्णयों पर राय नहीं ली जाती। शिक्षा, करियर और विवाह जैसे विषयों पर अंतिम निर्णय परिवार या समाज का होता है। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे परिस्थितियों के आगे मौन रहें। जब हम कहते हैं कि ''बेटियां घर की इज्जत होती हैं'', तो अक्सर उस इज्जत की भारी कीमत उनकी स्वतंत्रता छीनकर चुकाई जाती है। किसी की आजादी को सीमित करके समाज अपनी गरिमा नहीं बचा सकता।

पूजा नहीं, अवसर चाहिए

बालिका दिवस पर कन्या पूजन की थाली सजाने से बेहतर है कि उन्हें समान अवसरों की थाली दी जाए। वास्तविक सम्मान तब होगा जब उन्हें अपने सपने चुनने की आजादी मिले और उनकी 'ना' को भी उतनी ही गंभीरता से लिया जाए जितनी उनकी 'हां' को। कानून और सरकारी नीतियां अपनी जगह सही हैं, लेकिन जब तक परिवार और समाज की मानसिकता नहीं बदलेगी, तब तक वास्तविक परिवर्तन धरातल पर नहीं दिखेगा। सामाजिक सुधार का केंद्र मंच नहीं, बल्कि हमारा अपना घर होना चाहिए। बालिकाओं को दया या संरक्षण की नहीं, बल्कि एक सक्षम नागरिक के रूप में पहचान की आवश्यकता है। उनके अधिकार कोई उपकार नहीं, बल्कि उनका संवैधानिक हक हैं। समाज को आत्ममंथन करना होगा कि क्या वह वास्तव में बेटियों को बेटों के समान अधिकार दे पा रहा है? कन्यादान की संकुचित मानसिकता से बाहर निकलकर 'कन्या-स्वाधिकार' को अपनाना ही एक संवेदनशील और आधुनिक समाज की असली पहचान है। जब तक बालिकाओं को सम्मान और बराबरी के साथ जीने का अधिकार नहीं मिलता, तब तक ऐसे दिवस केवल औपचारिक आयोजन ही बने रहेंगे।

णमोकार तीर्थ: ४०० साधु-साध्वियों के आहार हेतु 'राजा श्रेयांस चौका नगर' का भव्य उद्घाटन

चांदवड, नासिक. शाबाश इंडिया

णमोकार तीर्थ में ६ फरवरी से आयोजित होने वाले 'अंतरराष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव' की तैयारियाँ पूर्णता की ओर हैं। इस ऐतिहासिक अवसर पर देशभर से लगभग ४०० दिगंबर जैन साधु-साध्वियों का मंगल आगमन हो रहा है। मुनिराजों और आर्यिका माताजी की आहार चर्या हेतु निर्मित ५० सर्वसुविधायुक्त 'राजा श्रेयांस चौका नगर' के भव्य प्रवेश द्वार का उद्घाटन मंत्रोच्चार के साथ संपन्न हुआ। इस पुनीत कार्य में पुणे निवासी जिनेंद्र जैन (बाकलीवाल) परिवार के अभूतपूर्व योगदान हेतु महोत्सव समिति ने उन्हें 'सर संघाधिपति' के सर्वोच्च सम्मान से विभूषित किया। उद्घाटन समारोह में उपाध्यक्ष महावीर गंगवाल, ट्रस्टी अनिल जमगे, जमणालाल हपावत, पारस लोहाडे और बालब्रह्मचारी वैशाली दीदी सहित अनेक गणमान्य जन उपस्थित रहे। धर्मसभा में आचार्य श्री पद्मनंदिजी, देवनंदीजी एवं मुनिश्री अमोघकीर्तिजी-अमरकीर्तिजी आदि का पावन सानिध्य प्राप्त हुआ। पूज्य आचार्यों ने 'आहार दान' के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि सुपात्र दान ही जीवन कल्याण का मार्ग है। प्रतिष्ठाचार्य अक्षयभैय्या जैन और राष्ट्रीय संयोजक पारस लोहाडे ने बताया कि राजस्थान, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र से आए हजारों श्रद्धालुओं के जयकारों से पूरा परिसर गुंजायमान रहा।

हर्षोल्लास के साथ हुआ 'प्रज्ञा लोक' राष्ट्रीय कार्यालय का उद्घाटन

आचार्य श्री प्रज्ञासागर जी के पदारोहण दिवस पर एक करोड़ वृक्षारोपण का लिया गया संकल्प

कोटा. शाबाश इंडिया

तपोभूमि प्रणेता आचार्य 108 श्री प्रज्ञासागर जी महाराज के आचार्य पदारोहण दिवस के पावन अवसर पर 'राष्ट्रीय गुरु आस्था परिवार' द्वारा कोटा में एक भव्य समारोह का आयोजन किया गया। इस अवसर पर संस्था के राष्ट्रीय कार्यालय ''प्रज्ञा लोक'' का विधिवत उद्घाटन और सेवा कार्यों का शुभारंभ हुआ।

कार्यालय का उद्घाटन और दीप प्रज्वलन

राष्ट्रीय मीडिया प्रभारी एवं वरिष्ठ पत्रकार पारस जैन 'पार्श्वमणि' ने बताया कि दादाबाड़ी क्षेत्र (भारत विकास परिषद चिकित्सालय के सम्मुख) स्थित नवनिर्मित कार्यालय का उद्घाटन सकल दिगंबर जैन समाज समिति, कोटा के अध्यक्ष प्रकाश बज एवं महामंत्री पदम बड़ला द्वारा किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ पीयूष जैन द्वारा प्रस्तुत मधुर मंगलाचरण एवं अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ हुआ।

आचार्य श्री का वर्चुअल आशीर्वाद

आचार्य श्री प्रज्ञासागर जी महाराज स्वयं वर्चुअल माध्यम से कार्यक्रम से जुड़े। उन्होंने गुरु आस्था परिवार के कार्यों की प्रशंसा करते हुए अपना मंगल आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्य श्री ने इस चातुर्मास को अपने जीवन का 'स्वर्णिम चातुर्मास' बताया और संस्था को विश्व मैत्री व मानव कल्याण के प्रति सदैव सक्रिय रहने का निर्देश दिया।

भक्ति और समर्पण की बयार

समारोह में समाजजनों द्वारा अष्टद्रव्य से पूजन कर अर्घ्य समर्पित किया गया। अर्पित सर्राफ की स्वर लहरियों और भक्ति गीतों ने संपूर्ण वातावरण को धर्ममय बना दिया। भजनों की प्रस्तुति पर भक्त भाव-विभोर होकर झूम उठे।

एक करोड़ वृक्षारोपण का महासंकल्प

गुरु आस्था परिवार के चेयरमैन यतीश जैन खेड़ावाला ने बताया कि संस्था का मुख्य उद्देश्य सेवा और साधना है। उन्होंने घोषणा की कि गुरुदेव के 'एक करोड़ वृक्षारोपण' के संकल्प को जनभागीदारी के माध्यम से पूर्ण किया जाएगा। अध्यक्ष लोकेश जैन सीसवाली ने जानकारी दी कि 'प्रज्ञा लोक' कार्यालय में महिलाओं, बच्चों और वरिष्ठ नागरिकों के लिए स्वास्थ्य संवाद, सांस्कृतिक गतिविधियां और पारंपरिक खेलों जैसे कार्यक्रम

नियमित रूप से आयोजित किए जाएंगे।

प्रमुख जनों की उपस्थिति

कार्यक्रम में राजस्थान प्रांत के महामंत्री जगदीश जिंदल, प्रवीण जैन, सुरेश हरसौरा, संजीव निर्माण सहित कई गणमान्य नागरिकों ने गुरुदेव के तप और सेवा पर विचार व्यक्त किए। कार्याध्यक्ष जे.के. जैन ने सामाजिक चुनौतियों पर चर्चा करते हुए सेवा कार्यों के विस्तार का आह्वान किया। अंत में महामंत्री नवीन जैन दौराया ने सभी का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के दौरान फल वितरण भी किया गया।

बसंत पंचमी पर एम्बिशन किड्स एकेडमी में उल्लासपूर्ण आयोजन

जयपुर (सांगानेर). शाबाश इंडिया

विद्या, ज्ञान और संगीत की देवी माँ सरस्वती को समर्पित 'बसंत पंचमी' के पावन अवसर पर एम्बिशन किड्स एकेडमी, सांगानेर में एक भव्य एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ संस्था अध्यक्ष डॉ. एम.एल. जैन 'मणि' तथा डॉ. शांति जैन 'मणि' द्वारा माँ सरस्वती के चित्र के समक्ष दीप प्रज्वलन एवं विधि-विधान से पूजा-अर्चना के साथ किया गया।

पीत वर्ण से सराबोर हुआ विद्यालय परिसर

इस विशेष अवसर पर संपूर्ण विद्यालय परिसर पीले रंग की सजावट से सराबोर नजर आया। बसंत के प्रतीक पीले रंग के महत्व को दर्शाते हुए सभी विद्यार्थी पीले परिधानों में उपस्थित हुए। बच्चे अपने साथ पीले पुष्प एवं पीला भोजन भी लाए, जिससे वातावरण में उत्सव का आनंद दोगुना हो गया। नन्हे-मुन्ने बच्चों ने सरस्वती वंदना, प्रेरक कविताओं, आकर्षक नृत्य एवं सुमधुर संगीत की प्रस्तुतियों से सभी का मन मोह लिया।

शिक्षा और संस्कार का संदेश

विद्यालय की प्रधानाचार्या डॉ. अलका जैन ने बसंत पंचमी के आध्यात्मिक और प्राकृतिक महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि यह पर्व ज्ञान, सकारात्मक ऊर्जा एवं नवचेतना का प्रतीक है। उन्होंने विद्यार्थियों को शिक्षा के मार्ग पर अडिग रहकर निरंतर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उप-प्राचार्या अनीता जैन ने बताया कि कार्यक्रम में शिक्षकों एवं अभिभावकों की भी सक्रिय सहभागिता रही। विद्यालय के निदेशक डॉ. मनीष जैन ने अपने उद्बोधन में कहा कि ऐसे आयोजनों का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में भारतीय संस्कृति, गौरवशाली परंपराओं एवं शिक्षा के प्रति सम्मान की भावना विकसित करना है।

हर्षोल्लास के साथ समापन

कार्यक्रम का समापन प्रसाद वितरण और सामूहिक छायाचित्र (फोटोग्राफ) सत्र के साथ हुआ। सभी ने एक-दूसरे को बसंत पंचमी की शुभकामनाएं दीं और पूरे परिसर में हर्षोल्लास का वातावरण बना रहा।

मुनि श्री अरहसागर जी एवं मुनि श्री सुहितसागर जी महाराज का भव्य मंगल प्रवेश

भक्ति भाव के साथ हुआ पाद प्रक्षालन, जयघोषों से गूंजी धर्मनगरी

ब्यावर. शाबाश इंडिया

धर्मपरायण नगरी ब्यावर में शुक्रवार को अपार जनसमूह और भक्तिमय वातावरण के बीच दो महान मुनिराजों का मंगल प्रवेश हुआ। संतशिरोमणि आचार्य १०८ श्री विद्यासागर जी महाराज एवं आचार्य श्री १०८ समयसागर जी महाराज के सुयोग्य शिष्य पूज्य मुनि १०८ श्री अरहसागर जी महाराज तथा राष्ट्रसंत आचार्य १०८ श्री सुंदरसागर जी महाराज के शिष्य पूज्य मुनि १०८ श्री सुहितसागर जी महाराज ससंघ का नगर में भव्य अगवानी की गई।

भक्ति और उत्साह का संगम

श्री दिगंबर जैन पंचायत के प्रवक्ता अमित गोधा ने बताया कि सकल दिगंबर जैन समाज के श्रद्धालुओं ने भावपूर्ण जयकारों के साथ मुनि संघ की अगवानी की। बैंड-बाजों, ढोल-नगाड़ों और विभिन्न महिला एवं पुरुष मंडलों की गरिमामयी उपस्थिति में मंगल प्रवेश उत्सव आयोजित किया गया। मंगल प्रवेश यात्रा अरिहंत कॉम्प्लेक्स से प्रारंभ होकर श्री आदिनाथ दिगंबर जैन मंदिर एवं श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर पहुँची। भगवान के दर्शनोपरांत यह यात्रा भगत चौराहा, सरावगी मोहल्ला, एकता सर्किल और अजमेरी गेट होते हुए श्री दिगंबर जैन पंचायती नसियां पहुँची, जहाँ यह एक विशाल धर्मसभा में परिवर्तित हो गई।

श्रद्धालुओं ने पखारे मुनि श्री के चरण

भगत चौराहे पर मुनि श्री ससंघ के स्वागत में सैकड़ों श्रद्धालुओं ने कतारबद्ध होकर थालों में पाद प्रक्षालन किया और मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। पंचायती नसियां में आयोजित धर्मसभा का शुभारंभ श्री दिगंबर जैन पंचायत, श्री दिगंबर जैन मारवाड़ी समाज तथा श्री पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर (अजमेर रोड) समिति के पदाधिकारियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन कमल रावका द्वारा किया गया।

मुनि वाणी: त्याग ही जीवन का वास्तविक आभूषण

धर्मसभा को संबोधित करते हुए पूज्य मुनि १०८ श्री अरहसागर जी महाराज ने 'त्याग' के महत्व पर मार्मिक प्रवचन दिए। मुनि श्री ने कहा: त्याग ही मानव जीवन का वास्तविक आभूषण है। जिस जीवन में त्याग नहीं होता, वह केवल भोग का साधन बनकर रह जाता है। आज का मानव संग्रह में सुख खोज रहा है, जबकि वास्तविक सुख त्याग में निहित है। जितना अधिक इच्छाओं का त्याग किया जाएगा, उतना ही मन शांत और जीवन सरल होगा। उन्होंने आगे स्पष्ट किया कि त्याग कमजोरी नहीं, बल्कि आत्मिक शक्ति का प्रतीक है। अहंकार, क्रोध, लोभ और मोह का त्याग ही व्यक्ति को मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर करता है।

प्रमुख जनों की उपस्थिति

इस अवसर पर श्री दिगंबर जैन पंचायत के अध्यक्ष अशोक काला, रूपचंद्र कासलीवाल, विजय फागीवाला, शशिकांत गदिया, अमित गोधा, अतुल पाटनी, नवीन बाकलीवाल, संजय रावका सहित बड़ी संख्या में समाज के गणमान्य नागरिक और महिला-पुरुष उपस्थित थे।

णमोकार तीर्थ पहुँचे मध्य प्रदेश तीर्थक्षेत्र कमेटी एवं महासमिति के पदाधिकारी, दायित्वों का करेंगे निर्वहन

णमोकार तीर्थ (नासिक). शाबाश इंडिया

महाराष्ट्र के नासिक जिले में स्थित णमोकार तीर्थ पर ६ से २५ फरवरी २०२६ तक आयोजित होने वाले 'अंतरराष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव एवं महामस्तकाभिषेक' की तैयारियों ने गति पकड़ ली है। इसी तारतम्य में विभिन्न राष्ट्रीय संस्थाओं के पदाधिकारियों ने तीर्थ क्षेत्र पहुँचकर अपनी सक्रिय भूमिका सुनिश्चित की।

गुरुदेव का आशीर्वाद और संगठनात्मक चर्चा

दिगंबर जैन महासमिति के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अशोक जैन बड़जात्या, भारतवर्षीय दिगंबर जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी (मध्यांचल) के कार्यकारी अध्यक्ष श्री डी.के. जैन, महामंत्री श्री राजकुमार जैन घाटे, जीर्णोद्धार कमेटी के राष्ट्रीय चेयरमैन श्री जिनेश झांझरी तथा कोषाध्यक्ष श्री प्रमोद जैन पापड़ीवाल सहित अनेक पदाधिकारियों ने णमोकार तीर्थ पहुँचकर परम पूज्य आचार्य श्री १०८ देवनंदी जी महामुनिराज को श्रीफल अर्पित कर आशीर्वाद प्राप्त किया। बुंदेलखंड के प्रभारी श्री संतोष कुमार जैन (घड़ी) भी अपने साथियों के साथ महोत्सव की विभिन्न जिम्मेदारियों का निर्वहन कर रहे हैं और मध्य प्रदेश की गतिविधियों का नेतृत्व कर रहे हैं।

जनसुविधा हेतु दान की घोषणा

तीर्थक्षेत्र कमेटी मध्यांचल के प्रचार प्रमुख एवं वरिष्ठ पत्रकार राजेश जैन रागी ने बताया कि गुरुदेव एवं महोत्सव समिति के अध्यक्ष श्री संतोष जैन पेंढारी के साथ महोत्सव की व्यवस्थाओं पर विस्तृत चर्चा हुई। इस अवसर पर मध्यांचल के कोषाध्यक्ष प्रमोद पापड़ीवाल ने श्रावकों के लिए शुद्ध जल हेतु दो वॉटर कूलर तथा त्यागीवृत्तियों के वस्त्र प्रक्षालन हेतु एक वाशिंग मशीन भेंट करने की घोषणा की। यह सामग्री 'अनूठी योजना' के तहत शीघ्र ही स्थापित की जाएगी।

मध्य प्रदेश की समाज को महामस्तकाभिषेक का विशेष अवसर

कलश आवंटन समिति के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री डी.के. जैन ने हर्ष व्यक्त करते हुए बताया कि अंतरराष्ट्रीय पंचकल्याणक के पश्चात, १५ फरवरी २०२६ का दिन विशेष रूप से मध्य प्रदेश की जैन समाज के लिए 'महामस्तकाभिषेक' हेतु सुरक्षित किया गया है। आचार्य श्री ने मध्य प्रदेश के श्रद्धालुओं को यह विशेष सौभाग्य प्रदान किया है। कमेटी ने प्रदेश के सभी धर्मप्रेमियों से इस पुनीत अवसर का लाभ उठाने की अपील की है।

14 वर्षों बाद हुआ मुनि श्री अनुमान सागर जी महाराज का भव्य मंगल प्रवेश

एक ही मंच पर विराजमान हुए दो 'नगर गौरव', उमड़ा जनसैलाब

भिंड (सोनल जैन). शाबाश इंडिया

दिल्ली से विहार करते हुए, लगभग 14 वर्षों के लंबे अंतराल के बाद, भिंड के 'नगर गौरव' मुनि श्री अनुमान सागर जी महाराज का शनिवार को अपनी जन्मभूमि भिंड की पावन धरा पर भव्य मंगल प्रवेश हुआ। मुनि श्री के आगमन से संपूर्ण सकल जैन समाज में उत्साह और भक्ति की लहर दौड़ गई। जैन समाज की मीडिया प्रवक्ता सोनल जैन ने बताया कि मुनि श्री अनुमान सागर जी महाराज की अगवानी बैंड-बाजों और ढोल-नगाड़ों के साथ भव्य रूप से की गई। नगर के इन्दिरा गांधी चौराहे पर उस समय एक ऐतिहासिक और भावुक क्षण देखा गया, जब भिंड में पूर्व से विराजमान नगर गौरव आचार्य श्री सुबल सागर जी महाराज एवं मुनि श्री अनुकरण सागर जी महाराज का मुनि श्री अनुमान सागर जी से मंगल मिलन हुआ। नगर प्रवेश के दौरान शहर के मुख्य मार्गों पर जगह-जगह श्रद्धालुओं द्वारा मुनि संघ पर पुष्प वर्षा की गई और भावपूर्ण पाद प्रक्षालन कर आशीर्वाद प्राप्त किया गया। स्वागत, वंदन और अभिनंदन की कतारों के बीच मुनि संघ शहर के महावीर गंज क्षेत्र पहुँचा। महावीर गंज में प्रवचन दे रहे आचार्य श्री सुबल सागर जी महामुनिराज के चरणों में मुनि श्री अनुमान सागर जी ने 'नमोस्तु' निवेदन कर वंदना की। वर्षों बाद दो नगर गौरव मुनिराजों को एक ही मंच पर विराजमान देख उपस्थित सैकड़ों श्रद्धालु भाव-विभोर हो उठे। इस दुर्लभ मिलन और धर्मसभा के माध्यम से बड़ी संख्या में भक्तों ने धर्म लाभ लिया।

बसंत पंचमी पर माँ सरस्वती की मूर्ति स्थापना एवं पूजन संपन्न

मुंबई (कांदिवली). शाबाश इंडिया। बसंत पंचमी के शुभ अवसर पर कांदिवली (पूर्व) स्थित ठाकुर विलेज, सिंह एस्टेट में विद्या की देवी माँ सरस्वती की मूर्ति स्थापना एवं भव्य पूजा-आरती का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन अभय निषाद द्वारा किया गया। माँ सरस्वती की प्रतिमा को अत्यंत श्रद्धा और भक्ति भाव के साथ विधि-विधान से स्थापित किया गया। इस अवसर पर वैदिक मंत्रोच्चार के बीच माँ का पूजन संपन्न हुआ, जिससे संपूर्ण वातावरण आध्यात्मिक ऊर्जा से भर गया। इस अवसर पर सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं पत्रकार लक्ष्मीकांत मिश्र 'कमलनयन' ने माँ के दर्शन किए और आशीर्वाद लिया। उन्होंने इस आयोजन की सराहना करते हुए बसंत पंचमी के सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डाला। पूजन और आरती के उपरांत उपस्थित सभी भक्तों के लिए 'महाप्रसाद' का वितरण किया गया। कार्यक्रम के अंत में आयोजक अभय निषाद ने पधारे हुए सभी अतिथियों और भक्तों का हृदय से आभार व्यक्त किया।

आपके विचार

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं सम्पादक राकेश जैन गोदिका द्वारा प्रकाशित दैनिक-ईपेपर 'शाबाश इंडिया' आम पाठक और समाज में जागरूकता फैलाने में सेतू का काम कर रहा है। आप अपने क्षेत्र के समाचार, आलेख, विचार आदि ई-मेल कर सकते हैं या निम्न नंबरों पर वाट्सअप कर सकते हैं।

सम्पादक: राकेश जैन गोदिका
@ 94140 78380, 92140 78380

दैनिक ई-पेपर
शाबाश इंडिया

shabaasindia@gmail.com | weeklyshabaas@gmail.com

दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास का अटूट संबंध

अनिल माथुर, जोधपुर

मानव जीवन में सफलता, संतोष और प्रगति का आधार केवल बाहरी परिस्थितियाँ नहीं होतीं, बल्कि व्यक्ति का दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास ही उसे सही दिशा प्रदान करता है। ये दोनों गुण एक-दूसरे के पूरक हैं और मिलकर जीवन की कठिन से कठिन चुनौतियों को भी सरल बना देते हैं। दृढ़ संकल्प वह आंतरिक शक्ति है, जो व्यक्ति को लक्ष्य से विचलित नहीं होने देती। जब मन में कोई उद्देश्य स्पष्ट होता है और उसे पाने का संकल्प अटल होता है, तब बड़ी से बड़ी बाधाएँ भी रास्ता नहीं रोक पातीं। संकल्प व्यक्ति को मानसिक रूप से इतना अनुशासित कर देता है कि वह प्रतिकूल समय में भी अपना संतुलन नहीं खोता। दूसरी ओर, आत्मविश्वास वह अटूट विश्वास है, जो व्यक्ति को स्वयं की क्षमताओं पर होता है। यह वह संबल है जो व्यक्ति को यह भरोसा दिलाता है कि वह परिस्थितियों से जूझ सकता है और अंततः सफलता प्राप्त कर सकता है। बिना आत्मविश्वास के संकल्प केवल एक इच्छा बनकर रह जाता है, जबकि आत्मविश्वास उसे वास्तविकता में बदलने का साहस देता है। वास्तव में, दृढ़ संकल्प आत्मविश्वास को जन्म देता है और आत्मविश्वास संकल्प को और अधिक पुष्ट करता है। जब व्यक्ति बार-बार प्रयास करता है और हार नहीं मानता, तो उसे अपने सामर्थ्य का बोध होने लगता है। यह बोध ही आत्मविश्वास है। जैसे-जैसे आत्मविश्वास बढ़ता है, व्यक्ति का संकल्प और भी दृढ़ होता जाता है। इस प्रकार इन दोनों के बीच एक 'सकारात्मक चक्र' बन जाता है।

ऐतिहासिक उदाहरण

इतिहास और वर्तमान, दोनों ही साक्षी हैं कि जिन महान विभूतियों ने असंभव को संभव किया, उनके पीछे अटूट संकल्प और अडिग आत्मविश्वास ही था। अनेक असफलताओं के बावजूद उन्होंने अपने लक्ष्य से मुँह नहीं मोड़ा, क्योंकि उन्हें स्वयं की आंतरिक शक्ति पर पूर्ण विश्वास था। दैनिक जीवन में भी यदि व्यक्ति छोटे-छोटे लक्ष्यों के लिए दृढ़ संकल्प ले और उन्हें पूर्ण करे, तो उसका आत्मविश्वास स्वतः ही बढ़ने लगता है। यही संचित आत्मविश्वास भविष्य की बड़ी चुनौतियों का सामना करने की प्रेरणा और शक्ति देता है। अंततः यह कहा जा सकता है कि दृढ़ संकल्प और आत्मविश्वास जीवन-रूपी रथ के दो पहिए हैं। इनमें से यदि एक भी कमजोर पड़ जाए, तो प्रगति का मार्ग अवरुद्ध हो जाता है। इन दोनों का उचित संतुलन ही व्यक्ति को सफलता, मानसिक शांति और आत्मसंतोष की परम ऊंचाइयों तक ले जाता है।

ऐतिहासिक पंचकल्याणक महोत्सवः मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ एवं उप-मुख्यमंत्री का होगा कारीटोरन आगमन

प्रतिष्ठाचार्य पंडित महेश कुमार (दीमापुर) के निर्देशन में भव्य तैयारियां जोरों पर

घुवारा/ललितपुर (भरत सेठ). शाबाश इंडिया

उत्तर प्रदेश के ललितपुर जिले में स्थित विश्व प्रसिद्ध दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र कारीटोरन में आगामी ७ से १३ मार्च २०२६ तक 'अंतरराष्ट्रीय पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं गजरथ महोत्सव' का भव्य आयोजन होने जा रहा है। पाषाण से भगवान बनने का यह पावन अनुष्ठान गणाचार्य श्री १०८ विराग सागर जी महाराज के पट्टशिष्य पट्टाचार्य श्री १०८ विशुद्ध सागर जी महाराज के आशीष एवं मुनि श्री १०८ समत्व सागर जी व मुनि श्री १०८ शील सागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में संपन्न होगा।

मुख्यमंत्री एवं उप-मुख्यमंत्री को दिया गया न्योता

महोत्सव की गरिमा को बढ़ाने के लिए शांतिनाथ दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र कारीटोरन के एक प्रतिनिधि मंडल ने लखनऊ में मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी एवं उप-मुख्यमंत्री श्री केशव प्रसाद मौर्य जी से भेंट की। प्रतिनिधि मंडल में श्री जिनेन्द्र कुमार (रानू सेठ), अनुभव कपासिया, दीपक कुमार और मनोज दुबे शामिल थे। मुख्यमंत्री जी ने महोत्सव के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित कीं और आगमन की स्वीकृति प्रदान की, जिससे आयोजन समिति में भारी हर्ष व्याप्त है।

देशभर से जुटेंगे श्रद्धालुः तैयारियों का व्यापक स्तर

बुंदेलखंड की धरा पर यह पाँचवाँ पंचकल्याणक महोत्सव ख्याति प्राप्त प्रतिष्ठाचार्य पंडित महेश कुमार (दीमापुर) के कुशल मार्गदर्शन में आयोजित हो रहा है। महोत्सव के लिए असम, नागालैंड, मणिपुर, राजस्थान, महाराष्ट्र, गुजरात और दिल्ली सहित अनेक प्रांतों से हजारों श्रद्धालुओं के आने की निरंतर स्वीकृतियां प्राप्त हो रही हैं।

आवास और भोजन के व्यापक प्रबंध

बाहर से आने वाले अतिथियों की सुविधा के लिए स्थानीय स्तर पर विशेषज्ञों द्वारा अस्थायी कॉटेज एवं डोम (Tent City) का निर्माण कराया जा रहा है। साथ ही समीपवर्ती तीर्थ क्षेत्रों जैसे नवागढ़, सिद्धक्षेत्र बड़ागाँव, श्रमणोदय दरगुआ, पपौरा जी और

पं. महेश कुमार शास्त्री- श्रीमती सुखवती देवी जैन

अहार जी में भी आवास की व्यवस्था सुनिश्चित की गई है। महोत्सव समिति सुरक्षा, यातायात, आवास और शुद्ध (शोध) भोजन के पुख्ता प्रबंध करने में दिन-रात जुटी हुई है। समिति ने देश भर के धर्मावलंबियों से इस महा-अनुष्ठान में पधार कर धर्म लाभ अर्जित करने की भावपूर्ण अपील की है।

सी.आर.डी.ए.वी. गर्ल्स कॉलेज में राष्ट्रीय मतदाता दिवस की धूम; छात्राओं ने कृत्रिम पोलिंग बूथ पर जाना मतदान का महत्व

ऐलनाबाद (रमेश भार्गव). शाबाश इंडिया

सी.आर.डी.ए.वी. गर्ल्स कॉलेज में प्राचार्य डॉ. भूषण मोंगा के दिशा-निर्देशानुसार संचालित सात दिवसीय एन.एस.एस. विशेष शिविर के छठे दिन 'राष्ट्रीय मतदाता दिवस' अत्यंत उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर राजनीति विज्ञान विभाग की प्रभारी कुसुम द्वारा 'मॉक इलेक्शन' (छद्म मतदान) का विशेष आयोजन किया गया।

प्रायोगिक ज्ञान हेतु बना कृत्रिम मतदान केंद्र

छात्राओं को मतदान की बारीकियों से अवगत कराने के लिए कॉलेज परिसर में एक आर्टिफिशियल पोलिंग बूथ (कृत्रिम मतदान केंद्र) तैयार किया गया। इस गतिविधि का मुख्य उद्देश्य छात्राओं को वास्तविक मतदान प्रक्रिया, पहचान पत्र की जांच, उंगली पर स्याही लगाने और वोट डालने के विभिन्न चरणों का व्यावहारिक अनुभव प्रदान करना था। प्रथम बार मतदाता बनने वाली छात्राओं के लिए यह अनुभव अत्यंत ज्ञानवर्धक रहा।

डिजिटल साक्षरता एवं संवैधानिक दायित्व

कार्यक्रम के दौरान असिस्टेंट प्रोफेसर दीपशिखा ने 'डिजिटल साक्षरता' पर विशेष व्याख्यान दिया। उन्होंने तकनीक के बढ़ते प्रभाव और ऑनलाइन सुरक्षा की बारीकियों को विस्तार से समझाया। कॉलेज के कार्यकारी निदेशक डॉ. करुण मेहता ने छात्राओं को संबोधित करते हुए उन्हें उनके सामाजिक और संवैधानिक उत्तरदायित्वों के प्रति प्रेरित किया।

सर्वांगीण विकास पर बल

प्राचार्य डॉ. भूषण मोंगा ने अपने संबोधन में कहा कि ऐसे आयोजनों से छात्राओं का सर्वांगीण विकास होता है और उनमें नागरिक बोध जागृत होता है। इस अवसर पर मैनेजमेंट सदस्य डॉली मेहता सहित कॉलेज का समस्त स्टाफ मौजूद रहा। कार्यक्रम का सफल संचालन प्रोग्राम ऑफिसर दीपिका रानी, किरणदीप कौर और सिमरन कौर द्वारा किया गया।

ज्ञान भारतम मिशन निदेशक द्वारा विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान का निरीक्षण

पाण्डुलिपि संरक्षण एवं संवर्धन से जुड़े प्रकल्पों की सराहना

जयपुर. शाबाश इंडिया

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के तहत संचालित 'ज्ञान भारतम् मिशन' के निदेशक इन्द्रजीत सिंह ने जयपुर स्थित विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान का औपचारिक निरीक्षण किया। इस अवसर पर उन्होंने संस्थान की कार्यप्रणाली तथा पाण्डुलिपि संरक्षण एवं संवर्धन से जुड़े विभिन्न प्रकल्पों का सूक्ष्मता से अवलोकन किया। निरीक्षण के दौरान निदेशक इन्द्रजीत सिंह ने कहा कि विश्वगुरुदीप आश्रम शोध संस्थान, ज्ञान भारतम् मिशन के 'क्लस्टर सेंटर' के रूप में उत्कृष्ट कार्य कर रहा है। संस्थान द्वारा पाण्डुलिपियों के सर्वेक्षण, सूचीकरण, डिजिटलीकरण एवं वैज्ञानिक संरक्षण के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयास राष्ट्रीय सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखने में मील का पत्थर साबित हो रहे हैं। निरीक्षण दल में निदेशक के साथ शिशिर पाढ़ी भी उपस्थित रहे। आर्काइव निदेशक चन्द्रसेन शेखावत ने पाण्डुलिपि संरक्षण के महत्व को रेखांकित करते हुए इसे और अधिक बढ़ावा देने की आवश्यकता पर बल दिया। संस्थान के उपाध्यक्ष एवं समन्वयक महामण्डलेश्वर स्वामी ज्ञानेश्वर पुरी ने संस्थान की गतिविधियों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि शोध संस्थान दीर्घकाल से इस क्षेत्र में कार्यरत है। उन्होंने विश्वास जताया कि ज्ञान भारतम् मिशन से जुड़कर अब इन कार्यों को और अधिक व्यापक और तकनीकी रूप से सुदृढ़ स्तर पर ले जाया जा सकेगा। इस अवसर पर राजस्थान पाण्डुलिपि समन्वयक डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा ने राज्य में प्रस्तावित आगामी कार्ययोजना का विस्तृत प्रस्तुतीकरण दिया। इसमें सर्वेक्षण की प्रक्रिया, डिजिटलीकरण की आधुनिक रणनीति तथा संपूर्ण राजस्थान में पाण्डुलिपि संरक्षण नेटवर्क को मजबूत करने की रूपरेखा प्रस्तुत की गई। अंत में निदेशक इन्द्रजीत सिंह ने संस्थान की टीम के समर्पण की सराहना करते हुए शुभकामनाएं दीं और आशा व्यक्त की कि यह केंद्र मिशन के उद्देश्यों को पूर्ण करने में अग्रणी भूमिका निभाता रहेगा।

महावीर इंटरनेशनल द्वारा विद्यालयों में तिरंगा झंडा वितरण कार्यक्रम संपन्न

नौगामा/बागीदौरा. शाबाश इंडिया

'सबकी सेवा, सबको प्यार' के मूल मंत्र के साथ कार्यरत संस्था महावीर इंटरनेशनल (बागीदौरा एवं नौगामा केंद्र) द्वारा गणतंत्र दिवस की पूर्व संध्या पर भव्य तिरंगा झंडा वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम विद्या निकेतन स्कूल और एस.डी.आर.के. स्कूल, बागीदौरा में राष्ट्रीय उद्घोष के साथ संपन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि कमलेश तम्बोलिया एवं उपाचार्य अरविंद देवड़ा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए भारतीय गणतंत्र की महत्ता और देश की अखंडता को बनाए रखने में युवाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला। इससे पूर्व आचार्य पूनम सोलंकी एवं वैभव जैन ने सभी अतिथियों का भावभीना स्वागत किया। जोन सचिव विनोद दोसी, गवर्नमेंट काउंसिल सदस्य सुरेश चंद्र गांधी, शाखा अध्यक्ष दिलीप दोसी और वीर सदस्य खुशपाल जैन ने विद्यार्थियों को तिरंगा झंडा वितरित किया। प्रियकारिणी वीरा अध्यक्ष संगीता दोसी ने विशेष रूप से बालिकाओं को झंडा वितरण कर प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर विद्यालय के छात्र-छात्राओं ने देशप्रेम से ओतप्रोत मधुर गीतों की प्रस्तुतियां दीं। महावीर इंटरनेशनल परिवार की ओर से दोनों विद्यालयों के गुरुजनों को तिरंगा उपरणा (दुपट्टा) पहनाकर सम्मानित किया गया। सामाजिक सरोकारों को निभाते हुए महावीर इंटरनेशनल द्वारा हृदय रोग के प्राथमिक उपचार हेतु दोनों विद्यालयों के स्टाफ को 'जीवन रक्षक किट' प्रदान किए गए। संस्था के सदस्यों ने इसके उपयोग और आपातकालीन स्थितियों में प्राथमिक उपचार के महत्व के बारे में भी जानकारी दी। समारोह में सचिव बसंतकान्त शर्मा, राजेंद्रप्रसाद दोसी, लक्ष्मीलाल मेहता, सुरेश जैन, जगजी कटारा, ललित सवोत सहित वीरा केंद्र की ओर से विमला मेहता, इंदिरा मेहता, सुनीता, प्रतीक्षा और मनीषा उपस्थित रहीं। कार्यक्रम के अंत में पूनम सोलंकी ने सभी का आभार व्यक्त किया।

साधर्मी बंधुओं ने भक्तिभाव से की वंदना, शांतिनाथ सेवा संघ की वार्षिक यात्रा संपन्न

मुरैना (मनोज जैन नायक). शाबाश इंडिया

भगवान आदिनाथ स्वामी सहित पांच तीर्थंकरों की पावन जन्मभूमि, शाश्वत तीर्थ अयोध्या जी में ६२१ यात्रियों के विशाल समूह ने तीर्थंकरों की आराधना करते हुए अभिषेक, शांतिधारा, पूजन एवं वंदना की। दिल्ली की प्रतिष्ठित संस्था द्वारा आयोजित इस यात्रा में श्रद्धालुओं का उत्साह देखते ही बनता था।

पांच तीर्थंकरों की जन्मभूमि पर माथा टेका

तीर्थयात्रा संघ के मुख्य संयोजक गोकुलचंद जैन ने बताया कि दिल्ली (शकरपुर) की सेवाभावी संस्था श्री शांतिनाथ सेवा संघ द्वारा 'वार्षिक तीर्थयात्रा २०२५' के तहत २३ जनवरी से २६ जनवरी तक अयोध्या और बनारस की यात्रा का आयोजन किया गया है। यात्रा के प्रथम दिन सभी ६२१ तीर्थयात्रियों ने अयोध्या जी पहुँचकर भगवान आदिनाथ, अजितनाथ, अभिनंदननाथ, सुमतिनाथ और अनंतनाथ स्वामी के साथ अन्य सभी जिनालयों के दर्शन किए।

गणिनी ज्ञानमति माताजी का आशीर्वाद

अत्यंत भक्ति भाव के साथ सभी साधर्मी बंधुओं ने परम पूज्य गणिनी प्रमुख आर्यिका शिरोमणि ज्ञानमति माताजी के श्रीचरणों में श्रीफल अर्पित कर मंगल आशीर्वाद प्राप्त किया। माताजी के दर्शन पाकर यात्री स्वयं को धन्य महसूस

कर रहे थे। तीन दिवसीय यात्रा के दौरान यात्रियों की सुख-सुविधाओं का विशेष ध्यान रखा गया है। यात्रियों के लिए चाय, नाश्ता एवं सुस्वादु भोजन की व्यवस्था श्रावक श्रेष्ठी पवन जैन (नोएडा) परिवार की ओर से की गई है। वहीं, रात्रि में फलाहार एवं दूध आदि की व्यवस्था वीरेंद्र कुमार-सतेंद्र कुमार जैन (आगरा) के सौजन्य से की गई है।

अगला पड़ाव: श्रावस्ती और बनारस

संस्था के अध्यक्ष हरिश्चंद्र जैन, मंत्री दिनेश जैन 'टीटू', कोषाध्यक्ष अजय जैन 'अजीया', दीपक जैन एवं मुरैना के संजय जैन सहित पूरी टीम यात्रियों की यात्रा को सुगम बनाने में जुटी हुई है। यात्रा के दूसरे दिन सभी यात्री १२ बसों द्वारा श्रावस्ती के लिए रवाना हुए। वहाँ तीर्थ वंदना एवं पूजन के पश्चात सभी श्रद्धालु धर्मनगरी बनारस (वाराणसी) की ओर प्रस्थान करेंगे।

भगवान के ज्ञान कल्याणक पर समवशरण से गूँजी भगवान की दिव्य ध्वनि

जैन समाज के भामाशाह ने दिया प्रभु को आहार

गजरथ महोत्सव जीवन को मंगल, सुख, शांति और समृद्धि से भर देगा: राष्ट्र संत मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज

विश्व शांति महायज्ञ में डेढ़ करोड़ मंत्रों के साथ आहुतियाँ समर्पित, गोला कोट में गजरथ महोत्सव के साथ नए इतिहास का सृजन: विजय धुर्रा

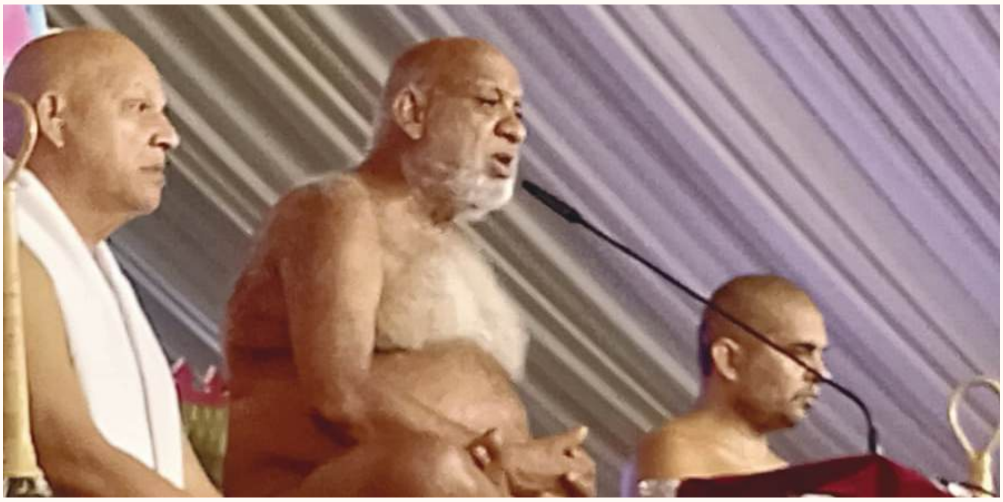

गोला कोट, खनियाधाना. शाबाश इंडिया

राष्ट्र संत निर्यापक श्रमण मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज ससंघ के सान्निध्य एवं प्रतिष्ठाचार्य प्रदीप भैया तथा मुकेश भैया के निर्देशन में 9 तारीख से चल रहे श्री मद् जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महा महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ्झ गजरथ महोत्सव का आज भव्य गजरथ शोभायात्रा की सात परिक्रमा पूर्ण होने के साथ अपार जनसमूह की जय-जयकार के बीच समापन हुआ।इस अवसर पर जैन समाज के भामाशाह अशोक पाटनी (श्रमण संस्कृति स्थान, जयपुर), प्रमोद पहाड़िया, पूर्व पुलिस महानिदेशक शांत कुमार जैन, राकेश जैन (वास्तु, दिल्ली), चेतन जी (दिल्ली), मध्यप्रदेश महासभा संयोजक विजय धुर्रा, राजेंद्र थनवारा सहित अनेक प्रमुख जन उपस्थित रहे। कार्यक्रम के दौरान आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज के चित्र का अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन किया गया। विशाल धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज ने कहा ''भगवान से न भीख चाहिए, न भेंट। भेंट तो मेहमान को दी जाती है, हमें तो भगवान की वसीयत चाहिए।'' उन्होंने कहा कि गजरथ महोत्सव के माध्यम से धर्म की प्रभावना होती है और गजरथ में विराजमान त्रिलोकीनाथ के दर्शन जीवन को मंगलमय बनाते हैं। ज्ञान कल्याणक के अवसर पर समवशरण से भगवान की दिव्य ध्वनि गूँजी, जो एक अद्भुत अतिशय का अनुभव कराती है। इससे पूर्व नित्य पाठ एवं पूजन के पश्चात मुनि श्री आदि सागरजी महाराज की आहार चर्या का मनोहारी दृश्य देखने को मिला। इस अवसर पर अशोक पाटनी एवं आर. के. मारवाल (किशनगढ़) को नवधा भक्ति पूर्वक आहार देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुनि श्री ने कहा कि अतिशय वही है जहाँ बिना प्रत्यक्ष कारण के कार्य सिद्ध हो जाए। अरिहंत भगवान बोल नहीं रहे, फिर भी श्रावकों को उनकी स्पष्ट वाणी सुनाई देती है – यही दिव्यता है। जैसे एक दीपक एक कोने में जलता है, लेकिन प्रकाश पूरे कक्ष में फैल जाता है। उन्होंने यह भी कहा कि जब जीवन में परिवार से अधिक धर्म महत्वपूर्ण हो जाए, और सांसारिक संबंधों में आत्मिक मूल्यों को प्राथमिकता मिले, तब व्यक्ति शीघ्र ही आत्मकल्याण के मार्ग पर अग्रसर होता है। मध्यप्रदेश महासभा संयोजक एवं अशोकनगर जैन समाज मंत्री विजय धुर्रा ने जानकारी दी कि 25 तारीख को श्री मद् जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महा महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ के साथ गजरथ महोत्सव का भव्य प्रवर्तन होगा। पंचकल्याणक में चलने वाले रथों को रिद्धि-सिद्धि प्रदायक माना जाता है। विश्व शांति महायज्ञ में आज तीर्थंकर कुंड, अरिहंत कुंड एवं गंधर कुंड पर सौधर्म इन्द्र राकेश जी (दिल्ली), कुबेर इन्द्र चेतन जी (दिल्ली), महायज्ञ नायक सतेन्द्र जैन (राजधानी वैशाली) सहित सभी प्रमुख पात्रों द्वारा सवा करोड़ मंत्रों के साथ आहुतियाँ समर्पित की जाएँगी।

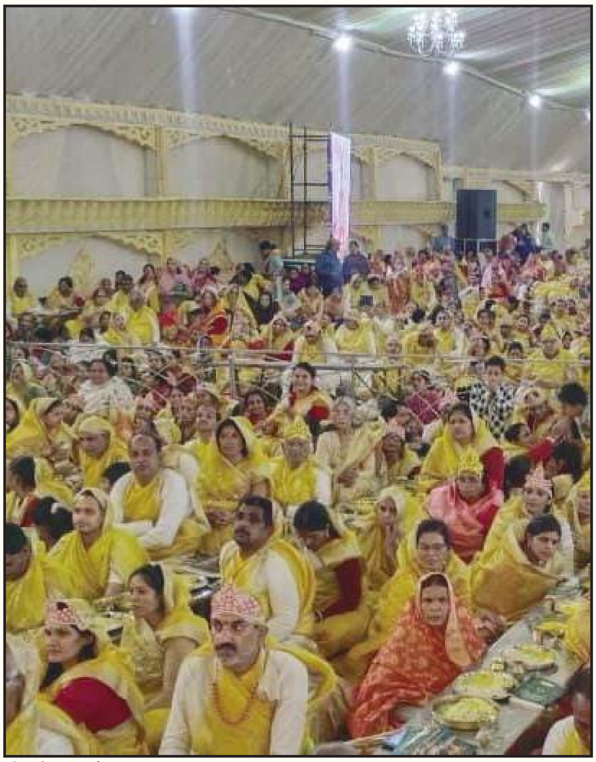

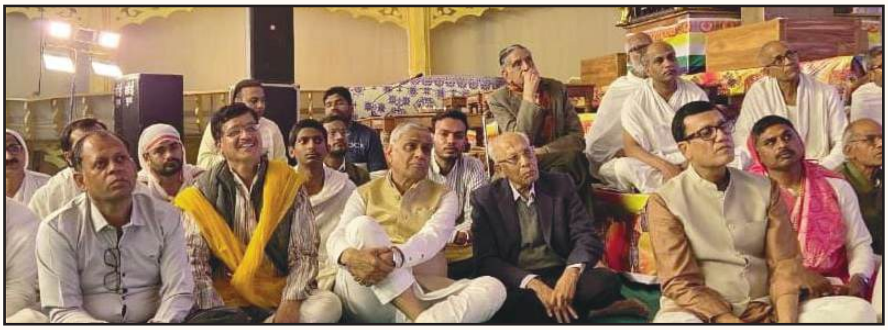

महल रोड स्थित जैन मंदिर में "श्री मुनिसुव्रतनाथ पाठशाला" का शुभारंभ

जयपुर. शाबाश इंडिया

बच्चों में धार्मिक संस्कारों को सुदृढ़ करने एवं नैतिक मूल्यों का बीजारोपण करने के उद्देश्य से महल रोड स्थित जैन मंदिर में श्री मुनिसुव्रतनाथ पाठशाला का विधिवत शुभारंभ किया गया। यह पाठशाला श्री मुनिसुव्रतनाथ फाउंडेशन के तत्वावधान में संचालित की जा रही है। कार्यक्रम के दौरान समन्वयक अभिषेक सांघी ने उपस्थित जनसमूह को संबोधित करते हुए कहा कि संस्कारवान बच्चे समाज, धर्म और राष्ट्र के भविष्य की अमूल्य धरोहर होते हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान समय में लौकिक अर्थात विद्यालयी शिक्षा तो सहज रूप से उपलब्ध हो जाती है, किंतु धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा का अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। ऐसे में पाठशालाएं बच्चों के सर्वांगीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने कहा कि विविध संस्कारोन्मुख गतिविधियों, गुरुजनों के आशीर्वचनों एवं शिक्षकों के मार्गदर्शन से ही बच्चों में सुदृढ़ संस्कारों का निर्माण संभव है। पाठशाला के उद्घाटन सत्र में संस्था की परम संरक्षक निर्मला सांघी एवं मंत्री शिवकुमार ने बच्चों एवं अभिभावकों को पाठशाला के महत्व से अवगत कराया। उन्होंने बताया कि धार्मिक एवं नैतिक शिक्षा किस प्रकार बच्चों के चरित्र निर्माण, अनुशासन एवं जीवन मूल्यों को मजबूत करने में सहायक सिद्ध होती है। बच्चों को सरल, रोचक एवं खेल-खेल में धर्म की शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से अनुभवी शिक्षकों का चयन किया गया है। शिक्षकों के इस पैनल में सपना, डॉ. प्रीति एवं मोना जैन शामिल हैं, जो बच्चों को सहज और प्रभावी पद्धति से शिक्षित करेंगी। कार्यक्रम के दौरान अभिभावकों ने भी पाठशाला की पहल की सराहना करते हुए इसे बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के लिए अत्यंत उपयोगी बताया।

विद्यालय में गूँजे सरस्वती वंदना के स्वर

पीले रंग में रंगा विद्यालय परिसर, वसंत पंचमी का छाया उल्लास

जयपुर. शाबाश इंडिया। सांगानेर स्थित आदिनाथ पब्लिक स्कूल में शुक्रवार, 23 जनवरी 2026 को वसंत पंचमी का पर्व अत्यंत हर्षोल्लास एवं श्रद्धा के साथ मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ माँ सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण, दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने पीले रंग के परिधान धारण कर वसंत ऋतु का स्वागत किया। पूरा विद्यालय परिसर बसंती रंग में रंगा हुआ नजर आया, जिससे वातावरण में उल्लास और सकारात्मकता का संचार हुआ। विद्यालय की प्रधानाचार्या डॉ. पवना शर्मा ने सभी को वसंत पंचमी की शुभकामनाएँ देते हुए विद्यार्थियों को निरंतर अध्ययन, अनुशासन एवं रचनात्मकता के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि माँ सरस्वती की कृपा से ज्ञान, बुद्धि और विवेक का विकास होता है, जो जीवन को सही दिशा प्रदान करता है। कार्यक्रम के दौरान सभी विद्यार्थियों एवं शिक्षकों ने माँ सरस्वती से ज्ञान, बुद्धि एवं सद्भाव की कामना की। अंत में प्रसाद वितरण के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। यह आयोजन विद्यार्थियों के लिए न केवल आध्यात्मिक बल्कि प्रेरणादायक भी रहा, जिसने उनमें संस्कारों एवं सांस्कृतिक मूल्यों के प्रति जागरूकता को और अधिक मजबूत किया।

विशाल शोभायात्रा व झण्डारोहण के साथ आठ दिवसीय भगवत जिनेन्द्र महा अर्चना महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ का शुभारंभ

जयपुर. शाबाश इंडिया

दिगम्बर जैन समाज के लिए अत्यंत गौरवपूर्ण आठ दिवसीय भगवत जिनेन्द्र महा अर्चना महोत्सव एवं विश्व शांति महायज्ञ अनुष्ठान का शुभारंभ रविवार को भव्य शोभायात्रा एवं झण्डारोहण के साथ होगा। यह आयोजन अंतर्मना आचार्य प्रसन्न सागर महाराज जयपुर प्रवास समिति, जयपुर के तत्वावधान में वीटी रोड, शिप्रा पथ स्थित हाउसिंग बोर्ड ग्राउंड पर आयोजित किया जा रहा है, जिसकी सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई हैं। रविवार प्रातः 7 बजे मीरामार्ग स्थित दिगम्बर जैन मंदिर से आयोजन स्थल तक श्रीजी की विशाल रथयात्रा निकाली जाएगी। यह रथयात्रा जयपुर में पहली बार 5400 महिलाओं एवं 1100 पुरुषों सहित कुल 6500 श्रद्धालुओं की सहभागिता से संपन्न होगी। महिलाएं पीले रंग की साड़ियों में तथा पुरुष पीले धोती-दुपट्टे में शोभायात्रा में सम्मिलित होंगे। शोभायात्रा में हाथी, घोड़े, ऊंट, बैंड-बाजे, बग्घियां, श्रीजी का रथ तथा 12 जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं आकर्षण का केंद्र रहेंगी। शोभायात्रा के आयोजन स्थल पहुंचने पर प्रतिष्ठाचार्य ब्रह्मचारी तरुण भैया (इंदौर) के निर्देशन में समाज श्रेष्ठी अनिल-मीना जैन (नागपुर) द्वारा झण्डारोहण किया जाएगा, जिससे आठ दिवसीय अनुष्ठान का विधिवत शुभारंभ होगा। मुनि भक्त ज्ञानचंद पंकज झांझरी विशाल मंडप का उद्घाटन करेंगे। आयोजन समिति के अध्यक्ष सुभाषचंद जैन एवं महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि आचार्य प्रसन्न सागर महाराज ससंघ के सान्निध्य में 13 वर्षों बाद जयपुर में यह भव्य आयोजन हो रहा है। इस अवसर पर रविवार, 25 जनवरी को प्रातः 10 बजे भव्य जिनेश्वरी दीक्षा महोत्सव आयोजित किया जाएगा। संघस्थ क्षुल्लक 105 वर्णी नैगम सागर महाराज को मुनि दीक्षा तथा क्षुल्लिका 105 व्रत प्रभा माताजी को आर्यिका दीक्षा प्रदान की जाएगी। मानसरोवर स्थित हाउसिंग बोर्ड ग्राउंड में लगभग 40 हजार वर्ग मीटर क्षेत्र में सात विशाल डोम तैयार किए गए हैं। पूजा के लिए 450.132 वर्ग फीट का मुख्य पंडाल, तीन समवशरण तथा तीन स्तरों वाला विशाल मंच बनाया गया है। आयोजन को सफल बनाने के लिए 19 सदस्यीय महोत्सव समिति एवं 33 व्यवस्था समितियों के 500 से अधिक कार्यकर्ता दिन-रात जुटे हुए हैं। कोषाध्यक्ष कैलाशचंद छाबड़ा ने बताया कि 25 से 31 जनवरी 2026 तक आयोजित इस सात दिवसीय अनुष्ठान में "श्री 1008 चारित्र शुद्धि महामंडल विधान" के अंतर्गत 1234 अर्घ्य अर्पित किए जाएंगे। इस महोत्सव के माध्यम से आत्मशुद्धि, विश्व शांति और धर्म प्रभावना का संदेश जन-जन तक पहुंचाया जाएगा।

पहली बार होगा विवाह अणुव्रत संस्कार शिविर

आचार्य श्री ससंघ के सान्निध्य में जयपुर में रविवार, 1 फरवरी को पहली बार विवाह अणुव्रत संस्कार शिविर का आयोजन किया जाएगा। इस शिविर में 5 से 20 वर्ष के विवाहित जीवन वाले दंपतियों को वैवाहिक आचरण की मर्यादा, जीवन में सामंजस्य एवं समन्वय स्थापित करने तथा आपसी संबंधों को सुदृढ़ और सफल बनाने के महत्वपूर्ण सूत्र बताए जाएंगे। आयोजन समिति के महामंत्री विनोद जैन कोटखावदा ने बताया कि महोत्सव के सफल संचालन हेतु 19 सदस्यीय महोत्सव समिति एवं 33 व्यवस्था समितियों का गठन किया गया है, जिनके माध्यम से सभी व्यवस्थाएं सुनिश्चित की जा रही हैं। समिति के कोषाध्यक्ष कैलाशचंद छाबड़ा एवं जुलूस के मुख्य संयोजक राकेश गोधा ने जानकारी दी कि महोत्सव के प्रथम दिन रविवार, 25 जनवरी को मानसरोवर स्थित मीरामार्ग के श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर से आयोजन स्थल तक श्रीजी की भव्य रथयात्रा निकाली जाएगी। रथयात्रा में 12 जैन तीर्थंकरों की प्रतिमाएं रथ पर विराजमान होकर चलेंगी। इसके साथ बैंड-बाजे, हाथी, घोड़े, ऊंट, ज्ञानवर्धक झांकियां, भजन मंडलियां, महिला मंडलों की सदस्याएं तथा लगभग 6500 श्रद्धालु बड़ी संख्या में सम्मिलित होंगे। उपाध्यक्ष राजेश रावकां एवं प्रदीप जैन ने बताया कि शोभायात्रा मार्ग में आकर्षक स्वागत द्वार बनाए गए हैं, जहां श्रीजी एवं आचार्य श्री ससंघ की राजनेताओं, प्रशासनिक अधिकारियों एवं गणमान्य श्रेष्ठीजनों द्वारा मंगल आरती की जाएगी। पूरे मार्ग में जैन ध्वज लगाए गए हैं।

गणतंत्र दिवस का पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया गया

जयपुर. शाबाश इंडिया। श्री महावीर दिगम्बर जैन शिक्षा परिषद द्वारा संचालित पद्मावती पब्लिक स्कूल, मानसरोवर में आज गणतंत्र दिवस का पावन पर्व अत्यंत श्रद्धा, उत्साह एवं देशभक्ति की भावना के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विद्यालय परिसर देशप्रेम के रंगों से सराबोर दिखाई दिया। इस विशेष अवसर पर विद्यालय के नन्हे-मुन्ने विद्यार्थी देश के अमर शहीदों एवं वीर सेनानियों की विभिन्न वेशभूषाओं में सजे-धजे नजर आए। बच्चों की मासूम मुस्कान, आत्मविश्वास और उत्साह से भरी प्रस्तुतियों ने उपस्थित सभी का मन मोह लिया। कार्यक्रम के दौरान विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों ने देशभक्ति गीतों पर मनमोहक नृत्य प्रस्तुत किए। इन प्रस्तुतियों के माध्यम से विद्यार्थियों ने राष्ट्र के प्रति अपने प्रेम और समर्पण को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया। विद्यालय की प्राचार्या हेमलता जैन ने बताया कि देशप्रेम से ओत-प्रोत इन प्रस्तुतियों के माध्यम से यह संदेश दिया गया कि आज की पीढ़ी ही कल के सशक्त और आत्मनिर्भर भारत की नींव है। उन्होंने कहा कि प्रत्येक ताल, प्रत्येक कदम और प्रत्येक मुस्कान में भारत माता के प्रति अटूट श्रद्धा और प्रेम झलक रहा था। कार्यक्रम के दौरान पूरा वातावरण ''वंदे मातरम्'' एवं ''भारत माता की जय'' के जयघोष से गूंज उठा। यह आयोजन बच्चों में राष्ट्रप्रेम, एकता, अखंडता एवं संविधान के प्रति सम्मान की भावना को सुदृढ़ करने का सशक्त माध्यम सिद्ध हुआ।

भगवान देवनारायण के 1114वें जन्मोत्सव पर निकली भव्य रथ यात्रा

गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म ने की शिरकत, '36 कौमों' के साथ विकास का लिया संकल्प

श्रीमहावीरजी (करौली). शाबाश इंडिया

भगवान देवनारायण मंदिर परिसर में दो दिवसीय वार्षिक मेले के दौरान शनिवार को भगवान देवनारायण के 1114वें जन्मोत्सव के अवसर पर विशाल रथ यात्रा निकाली गई। इस धार्मिक महोत्सव में राजस्थान सरकार के गृह राज्य मंत्री श्री जवाहर सिंह बेढ़म मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। 13 गाँव मंदिर कमेटी के अध्यक्ष बहादुर सिंह ने बताया कि रथ यात्रा मंदिर परिसर से प्रारंभ होकर गंभीर नदी के तट तक पहुँची, जहाँ भगवान देवनारायण का विधि-विधान से जलाभिषेक किया गया। यात्रा में सबसे आगे सैकड़ों महिलाएं मंगल कलश धारण कर चल रही थीं, वहीं हजारों श्रद्धालु 'देवजी महाराज' के जयकारे लगा रहे थे। जब यात्रा श्रीमहावीरजी के मुख्य द्वार पर पहुँची, तो जैन मंदिर प्रबंधन द्वारा भगवान की आरती उतारी गई और भव्य स्वागत किया गया। मार्ग में विभिन्न समाज के प्रतिनिधियों ने पुष्प वर्षा कर रथ यात्रा का अभिनंदन किया। गंभीर नदी से लौटकर यह यात्रा पुनः मंदिर परिसर पहुँची, जहाँ यह एक विशाल धर्म सभा में परिवर्तित हो गई। धर्म सभा से पूर्व भगवान की माला की बोली लगाई गई, जिसे जगरूप खटाना (केमरी) ने 71,101 रुपये की उच्चतम बोली लगाकर प्राप्त किया। सभा को संबोधित करते हुए गृह राज्य मंत्री जवाहर सिंह बेढ़म ने कहाः ये मेले हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा के नेतृत्व में सरकार '36 कौमों' को साथ लेकर अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक विकास पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध है। करौली क्षेत्र के समग्र विकास के लिए हम संकल्पित हैं और जनप्रतिनिधियों के सहयोग से यहाँ विकास की नई गंगा बहाई जाएगी। इस अवसर पर राजकुमारी जाटव ने

श्रीमहावीरजी को राष्ट्रीय स्तर का तीर्थ बताते हुए आगामी परिसीमन में नवीन विधानसभा बनाने की मांग उठाई। उन्होंने कहा कि ऐसे आयोजन सामाजिक समरसता को बढ़ावा देते हैं। करौली विधायक दर्शन सिंह गुर्जर और पूर्व विधायक मानसिंह गुर्जर ने भी सभा को संबोधित किया। कार्यक्रम के दौरान 'टॉमी पहलवान' की घोड़ी के नृत्य ने सभी का मन मोह लिया और प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। समारोह में भाजपा जिला अध्यक्ष गोवर्धन सिंह जादौन सहित गुर्जर समाज के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

गणतन्त्र दिवसः आत्मसम्मान, त्याग और जागरूकता का राष्ट्रीय संकल्प

नितिन जैन, पलवल (हरियाणा)

२६ जनवरी केवल एक तारीख नहीं है, यह भारत की आत्मा का उत्सव है। यह वह दिन है जब इस राष्ट्र ने स्वयं से यह वादा किया था कि अब भारत किसी व्यक्ति, परिवार या सत्ता की इच्छा से नहीं, बल्कि संविधान, न्याय और जनभावना से चलेगा। यह दिन उन अनगिनत बलिदानों की स्मृति है, जिनके कारण हम आज गर्व से कह पाते हैं– 'हम भारत के नागरिक हैं।' गणतन्त्र दिवस हमें सम्मान भी देता है और उत्तरदायित्व का बोध भी कराता है। संविधान केवल कानून की पुस्तक नहीं है, वह हमारे राष्ट्रीय चरित्र की आधारशिला है। इसी ने हमें समानता, सम्मान और अपनी बात कहने का साहस दिया। इसी ने हमें यह भरोसा दिलाया कि इस देश में कोई भी व्यक्ति कानून से ऊपर नहीं है। लेकिन, संविधान हमसे यह भी अपेक्षा करता है कि हम केवल माँगने वाले नहीं, बल्कि योगदान देने वाले नागरिक बनें। जब हम अपने कर्तव्यों को विस्मृत कर देते हैं, तब अधिकार भी धीरे-धीरे अर्थहीन हो जाते हैं। आज का समय आत्मचिंतन की माँग करता है। हम गर्व से तिरंगा फहराते हैं, पर क्या हम अपने आचरण में भी तिरंगे के मूल्यों को जीते हैं? देश केवल सरकारों से नहीं, बल्कि प्रत्येक नागरिक से बनता है। जब कोई साधारण व्यक्ति भी गलत के आगे सिर झुकाने से इनकार करता है, तब देश सुदृढ़ होता है। जब कोई रिश्वत देने से मना करता है या अन्याय देखकर मौन नहीं रहता, तब वह अकेला व्यक्ति भी राष्ट्र की रीढ़ बन जाता है। गणतन्त्र का वास्तविक स्वरूप इन्हीं साहसी निर्णयों में निहित है। देश की एकता केवल सैनिकों की वर्दी में नहीं, बल्कि नागरिकों के हृदय में बसती है। जब हम एक-दूसरे को संदेह की दृष्टि से देखते हैं या घृणा को सामान्य बना लेते हैं, तब हम अनजाने में राष्ट्र की आत्मा को चोट पहुँचाते हैं। इसके विपरीत, जब हम एक-दूसरे को समझने, जोड़ने और संभालने का प्रयास करते हैं, तब भारत वास्तव में महान बनता है। गणतन्त्र दिवस हमें जोड़ने का दिन है, विभाजन का नहीं। युवा भारत की सबसे बड़ी शक्ति हैं। यदि युवा निराशा, स्वार्थ और भ्रम में फँसेंगे, तो देश कमजोर होगा। लेकिन यदि वे सत्य, सेवा और साहस को अपना मार्ग बनाएँगे, तो भारत की प्रगति को कोई रोक नहीं सकता। इस गणतन्त्र दिवस पर हमें केवल शुभकामनाओं तक सीमित नहीं रहना चाहिए, बल्कि एक गहरा संकल्प लेना चाहिए। संकल्प यह कि हम केवल शिकायत करने वाले नहीं, बल्कि समाधान प्रस्तुत करने वाले नागरिक बनेंगे। हम अपने घर, मोहल्ले और कार्यक्षेत्र से बदलाव की शुरूआत करेंगे। सत्य, ईमानदारी और न्याय के मार्ग पर चलना ही हमारे स्वतंत्रता सेनानियों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी। एक जिम्मेदार, संवेदनशील और जागरूक भारत का निर्माण ही २६ जनवरी का वास्तविक अर्थ है।

पावापुरी तीर्थ पर त्याग और वैराग्य की अनूठी मिसाल : अनीश भैया की जैनेश्वरी दीक्षा

तप कल्याणक के पावन अवसर पर उमड़ा जनसैलाब, जयकारों से गूँजी निर्वाण भूमि

पावापुरी (बिहार). शाबाश इंडिया। भगवान महावीर की निर्वाण भूमि पावापुरी के पावन प्रांगण में इन दिनों भक्ति और वैराग्य की अविरल गंगा बह रही है। अवसर है 'श्रीमज्जिनेन्द्र चौबीसी पंचकल्याणक महोत्सव' का, जिसके तीसरे दिन २३ जनवरी २०२६ को एक अत्यंत भावुक और प्रेरणादायी दृश्य देखने को मिला। 'सराक केसरी' मुनि श्री १०८ विशल्य सागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य में उनके संघस्थ बाल ब्रह्मचारी अनीश भैया (पार्थ भैया) संसार की समस्त मोह-माया का त्याग कर 'दिगम्बर जैनेश्वरी दीक्षा' धारण कर मोक्ष मार्ग की ओर अग्रसर हो रहे हैं। महोत्सव के तीसरे दिन 'तप कल्याणक' के विशेष अवसर पर अनीश भैया के दीक्षा संस्कार भक्तिमय वातावरण में संपन्न हुए। अनीश भैया की यह दीक्षा समाज के लिए

एक ज्वलंत उदाहरण है। मात्र २६ वर्ष की अल्पायु में, जहाँ युवा अपने भविष्य और सांसारिक सुखों के पीछे भागते हैं, वहीं अनीश भैया ने आत्म-कल्याण का मार्ग चुना। विशेष बात यह है कि वे अपने माता-पिता की इकलौती संतान हैं। एक परिवार के लिए अपनी एकमात्र संतान को संयम के मार्ग पर भेजना अत्यंत कठिन निर्णय होता है, किंतु मोक्ष मार्ग की श्रेष्ठता को समझते हुए इस परिवार ने अपने पुत्र को गुरु चरणों में समर्पित कर दिया। दीक्षा उत्सव की शुरूआत प्रातः काल केशलोंच, मेंहदी और हल्दी की रस्मों के साथ हुई। यह दृश्य देखकर वहाँ उपस्थित हजारों श्रद्धालुओं की आँखें नम थीं, तो दूसरी ओर एक युवा के दृढ़ संकल्प को देख हर कोई नतमस्तक था। संघस्थ अलका दीदी ने बताया कि इस ऐतिहासिक पल का साक्षी बनने के लिए कोडरमा, हजारीबाग, दीमापुर, मुंबई, गुजरात और इंदौर सहित देश के कोने-कोने से भक्त पावापुरी पहुँचे हैं। मुनि श्री विशल्य सागर जी महाराज का मंगल आशीर्वाद पाकर अनीश भैया अब सांसारिक चोले को त्याग कर ऐलक वेष धारण करेंगे। पूरा पावापुरी क्षेत्र 'जय बोलो संयम मार्ग की' के जयकारों से गुंजायमान है। यह दीक्षा महोत्सव युवा पीढ़ी के लिए एक संदेश है कि वास्तविक सुख सुविधाओं में नहीं, बल्कि साधना और त्याग में निहित है।

संकलनकर्ताः राज कुमार जैन 'अजमेरा' (कोडरमा मीडिया प्रभारी)